सफलता की मिसाल हैं ये महिलायें

झारखंड राज्य आजीविका मिशन ने राज्य के कई ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को संगठित कर उनके आर्थिक और सामाजिक जीवन में उल्लेखनीय बदलाव लाया है. स्वयं सहायता समूह बनाये गये हैं और इनके अधिकाधिक सुदृढ़ीकरण के लिए इन समूहों को मिलाकर ग्राम संगठन बनाया गया है. इन ग्राम संगठनों को एक बड़ी मात्रा में ऋण के तौर पर पैसे दिये जा रहें हैं. स्वयं सहायता समूह की सहायता से पूर्वी सिंहभूम जिला के मनोहरपुर प्रखंड के कई गांवों की महिलाओं के जीवन में आर्थिक उन्नति हुई है और उनके द्वारा अपनाये गये कदम सराहनीय हैं. ये महिलाएं विकास के नये उदाहरण प्रस्तुत कर रहीं है. कुछ महिलाओं ने आजीविका परियोजना के लागू किये जाने से पूर्व के जीवन की चर्चा करते हुए बताया कि वाकई यह बदलाव उनके जीवन में एक बयार है.

ऋण से सिलाई मशीन खरीद कर सिलाई-कढ़ाई करती भालंती देवी.

जय मां सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत कर रहीं है जो स्वयं घर चलाने में सक्षम हैं.

समूह से भालंती ने ऋण लेकर सिलाई मशीन खरीदी और आज अपने घर पर ही सिलाई कर आजीविका चला रहीं हैं.

पूर्वी सिंहभूम के मनोहरपुर प्रखंड का एक गांव है-तरतरा. सुभाषिणी देवी इसी गांव की महिला हैं. वर्ष 2005 से पहले उनके पास जीविकोपार्जन का कोई उन्नत साधन नहीं था. उसी साल झारखंड राज्य आजीविका मिशन द्वारा स्वयं सहायता समूह बनाने संबंधी जानकारी मिली. सुभाषिणी ने भी इस प्रशिक्षण में अपनी हिस्सेदारी दी और उन्हें यह पता चला कि समूह का हिस्सा बनकर किस प्रकार अपना आर्थिक और सामाजिक उन्नति की जा सकती है. सुभाषिणी देवी बताती हैं कि वर्ष 2005 के बाद उनके परिवार की आर्थिक हालत काफी बेहतर हुई है. जब सुभाषिणी से यह पूछा गया अब समूह में नया क्या है और उन्हें सबसे अच्छा क्या लग रहा है तो वह कहती हैं कि प्रशिक्षण देने के लिए आयी आंध्रप्रदेश की महिलाओं से बहुत कुछ सीखने का मौका और जिंदगी में आगे बढ़ने का हौसला मिला. स्वयं सहायता समूह की बैठक में नियमित रूप से हिस्सेदारी ली और समूह के माध्यम से ऋण का लेन-देन किया. ऋण लिये पैसों का इस्तेमाल खेती-बाड़ी के लिए किया. वह उस समय को भी याद करती हैं जब गांव की महिलाओं को पंचायत में बैठने नहीं दिया जाता था.

अपने दुकान पर सविता देवी और खेत में काम करती महिला किसान सुभाषिणी देवी.

आजीविका से मिला खेती का प्रशिक्षण

झारखंड राज्य आजीविका मिशन के माध्यम से इसी समय उस क्षेत्र में कई समूह की महिलाओं को श्री विधि से धान की खेती करने के लिए प्रशिक्षण दिलाया गया. श्री विधि तकनीक से धान की खेती करने के लिए दिये गये प्रशिक्षण से महिला किसानों में एक आत्मविश्वास विकसित हुआ. लेकिन इन सबके बावजूद सबसे बड़ी बाधा जो पार करनी थी वह रिस्क फैक्टर था कि क्या इतने पैसे लगाने के बाद बेहतर उपज प्राप्त हो सकेगी या नहीं. कुछ लोगों ने तो यह भी कह दिया कि ये महिलाएं अपने पति से मार खाने का इंतजाम कर रही हैं. लेकिन भूमि के कुछ हिस्से में जब श्री विधि से धान की खेती करने के फलस्वरूप परीक्षण किया तो पाया कि आठ सप्ताह में ही पौधों की बेहतरीन वृद्धि हो चुकी थी. प्रशिक्षण के बाद समूह से पैसा लिया और बड़े पैमाने पर खेती की जिसके फलस्वरूप उस साल बेहतर उत्पादन प्राप्त हुआ था. इस क्षेत्र में सुभाषिणी की तरह कई महिला किसान है जो श्री विधि की नयी तकनीक को अपनाते हुए खेती कर रहीं हैं.

इसी गांव की महिला जय मां देवी की स्थिति थोड़ी अलग रही है. वर्ष 1999 में विवाह हुआ और दुर्भाग्य से इसी साल उनके पति ने किसी कारणवश झगड़ा किया और अलग हो गये. कुछ समय तक ऐसा ही चला. यह क्षण उनके लिए सबसे दुखद था जब उनके जीवन का कोई सहारा नहीं था. लेकिन उन्होंने अपना हौसला बनाये रखा. लोगों से समूह के बारे में सुना तो वर्ष 2005 में स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. समूह में उठना-बैठना हुआ तो कभी-कभी ये लगता था कि कहीं गांव से निकाल न दिया जाये क्योंकि पति स्वीकार नहीं कर रहे थे. लेकिन समूह की महिलाओं से सहायता मिली. ससुराल ही में रही और पति के ही जमीन पर खेती करने का फैसला किया. आजीविका के माध्यम से श्री विधि तकनीक से खेती करने का प्रशिक्षण मिला. खेती कर बेहतर उत्पादन प्राप्त किया. साथ ही जय मां सब्जी का उत्पादन करती हैं और उन्हें स्थानीय बाजार में बेचने का काम भी कर रही हैं. महिला सशक्तीकरण की दिशा में जय मां एक बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत कर रहीं हैं. वह कहती हैं : आज स्वयं घर चलाने में सक्षम हूं. बच्चे भी हैं और उन्हें अच्छी शिक्षा दे रहीं हूं.

ऋण लेकर प्रारंभ किया परचून की दुकान

सशक्तीकरण का उदाहरण पेश करने वाली एक और महिला हैं सविता देवी. इनके चेहरे पर मुस्कान और आत्मविश्वास साफ झलकता है. सविता मनोहरपुर प्रखंड के नंदपुर गांव के जिलीनगुटू टोला की निवासी हैं. इस टोले की साधारण सी दिखने वाली यह महिला सही अर्थों में एक सफल उद्यमी हैं. उद्यमी बनने का सिलसिला वर्ष 2003 से प्रारंभ हुआ जब वो मंशा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी. वह बताती हैं कि निवेश के लिए उनके पास पूंजी नहीं थी. सविता ने समूह के रिवॉल्विंग और ग्राम संगठन के सीआइएफ फंड से पैसा बतौर ऋण लिया. सविता बात करने के दौरान एक क्षण के लिए भावुक हो जाती हैं. उनकी आखों में आंसू के कुछ बूंद अनायास टपक पड़ते हैं. वह बताती हैं कि समूह से लिए पैसों से उन्होंने सबसे पहले कपड़ा धोने और स्नान करने के लिए साबुन खरीदा था. वह पुराने दिनों को याद करते हुए बताती हैं कि घर में खाने के लिए सिर्फ अनाज हुआ करता था और पैसों की भारी किल्लत रहती थी. कभी पैसों की जरूरत पड़ी तो पास-पड़ोस से मांगने पर पैसा तो नहीं मिलता उलटा बात सुनने को जरूर मिलता था. थोड़ी सी जो जमीन है उसी में पति खेती-बाड़ी करते हैं और उसी से जीवन यापन चल रहा था. लेकिन समूह से जुड़ने के बाद बहुत बदलाव आया है. ऋण के रूप लिए पैसों से एक छोटी रोजमर्रा की जरूरतों की सामान के लिए एक दुकान खोली. आज यह दुकान अच्छी चल रही है. चलायी जा रही परियोजना के कारण ही हो सका है. सविता को उम्मीद है कि उसके बच्चे भी अच्छी पढ़ाई कर सकेंगे.

सिलाई के लिए खरीदा मशीन

अन्य महिलाओं की तरह ही भालंती महतो के जीवन में भी उल्लेखनीय बदलाव आया है. भालंती इसी प्रखंड के पंचपहिया गांव की निवासी हैं. उन्होंने दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त की है. वर्ष 2013 में उजाला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी. उनका मानना है कि समूह से न सिर्फ वो अकेली मजबूत हुई हैं बल्कि उनके पति और परिवार को भी इसका लाभ पहुंचा है. आज पति का भी अपना स्वरोजगार है. भालंती बताती है कि समूह से पहली बार तब जुड़ी जब पति पीलिया रोग से ग्रस्त थे. गांव में किसी से भी उन्हें सहायता नहीं मिली. उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाये. किसी ने उन्हें बताया कि समूह से ऋण मिलता है तो पति के इलाज के इलाज के लिए ऋण लिये. चूंकि भालंती सिलाई-कढ़ाई जानती थी इसलिए ऋण लिये पैसों को लौटाने के लिए एक सिलाई कढ़ाई करने वाले दुकान में काम करने लगी. पति-पत्नी दोनों एक की पेशा में थे तो दोनों मिल कर पैसे कमा ले रहे थे. लेकिन कुछ समय बाद भालंती को स्वयं किसी रोग के इलाज के लिए फिर से पैसों की जरूरत पड़ी. जरूरत तो पूरी हो गई और इलाज भी हो गया लेकिन पैसों की बार बार जरूरतों को देखते हुए भालंती को लगा कि बाहर काम करने के बावजूद वह अच्छी आय नहीं अर्जित कर पा रही हैं तो उन्होंने समूह से तीसरी बार फिर ऋण लिया स्वयं का सिलाई मशीन खरीद कर अपना काम प्रारंभ किया. इन पैसों का इस्तेमाल उन्होंने सेकेंड हैंड सिलाई और इंटरलाकिंग मशीन खरीदने में किया. आज घर पर ही भालंती सिलाई का काम करती हैं जिससे उन्हें प्रत्येक माह 3000 से 4000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है.

नीति निदेशक तत्व में कहा गया है कि समुदाय के भौतिक संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार बंटा हो कि जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो.